Sahitya Samhita ISSN 2454-2695
Peer Reviewed Hindi Journal Vol 6 Issue 3 March 2020

विश्व में हिंदी की स्थिति मॉरिशस के विशेष संदर्भ में

सुशील कुमार

शोध छात्र– हिन्दी विभाग

रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

शोध–सार

इक्कीसवी सदी में हिंदी आज एक निर्णयात्मक भूमिका का कार्य कर रही है। आज भूमण्डलीकरण के दौर में हिंदी का महत्व बढ़ते ही जा रहा है। यह हमारे लिए गर्व की गात है। देश–विदेशों में हिंदी सबसे मजबूत और समृद्ध साहित्य के रूप में सामने आयी है। बोलने और समझनेवालों की संख्या की दृष्टि से हिंदी विश्व की दूसरी भाषा सबसे बड़ी भाषा है। अंतर्राष्ट्रीय साहित्य के रूप में हिंदी का विकास करने तथा उसे संयुक्त राष्ट्र संघ की एक प्रमुख साहित्य के रूप में मान्यता दिलाने के अपने मूल उद्देश्य को लेकर विश्व हिंदी सचिवालय निरंतर प्रयास कर रहा है।

Copyright ⓒ 2020Authors

Sahitya Samhita ISSN 2454-2695
Peer Reviewed Hindi Journal Vol 6 Issue 3 March 2020

विश्व में हिंदी की स्थिति मॉरिशस के विशेष संदर्भ में

सुशील कुमार

शोध छात्र– हिन्दी विभाग

रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय

जबलपुर (म.प्र.)

शोध–प्रपत्र

आज के करीब–करीब डेढ़ सौ वर्ष पहले भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'निजसाहित्य उन्नति सब उन्नति को मूल का मंत्र दिया था। भारतेन्दु के इस सन्देश के लिए सरे भारतीय उनके ऋणी हैं। यह हमारे नवजागरण की मूल प्रेरक शक्ति थी, जबकि विदेशी साहित्य, अंग्रेजी की चकाचौंध थी। उस समय जब हिंदी साहित्य का मंत्र फूँका था। अपनी साहित्य की उन्नति किस तरह व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र की उन्नति की बुनियाद बनती है।

न्यूयॉर्क में 13–15 जुलाई 2007 को आयोजित 'आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन' इस दृष्टि से बहुत ही महत्वपूण्र रहा कि विश्व भर के हिंदी प्रेमी संयुक्त राष्ट्र संघ के सभागार में एकत्र हुए और हिंदी का सामूहिक शंखनाद विश्व के कोने–कोने तक पहुँचाया। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव बान की मून ने कहा कि **'संसार के लोगों को एक–दूसरे के निकट लाने के लिए हिंदी समन्वय–सूत्र की तरह काम कर रही है। यह संसार की सभी संस्कृतियों के बीच एक सेतु है। यह सत्य है कि, 'बान की मून' को हिंदी के**

 Copyright ⓒ 2020Authors

विश्वव्यापी उज्जवल भविष्य का आभास हो चुका है और तेजी से हिंदी बढ़ते हुए दिखायी दे रही है।''1

हिंदी साहित्य पिछले कुछ दशकों से नये–नये सवालों का सामना कर रही है और उनका सक्षम समाधान खोज रही है। बीसवी सदी में भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन हुए। कृषि पर आधारित समाज से लेकर औद्योगिक समाज के रूप में भारतीय समाज का विकास हुआ था, जिसमें टेक्नॉलॉजी और पूँजी महत्वपूर्ण थी। भूमण्डलीयकरण, विश्वव्यापीकरण, प्रौद्योगिकीकरण आदि के बहाने अंग्रेजी का जाल बिछाकर हिंदी साहित्य के अस्तित्व को समाप्त करने की वर्तमान समय में जो साजिश चल रही है, यदि उससे हम सचेत न रहे तो न केवल भारत के लिए बल्कि एशिया की अनेक भाषाओं और उनकी सांस्कृतिक वर्ग क लिए खतरा पैदा हो सकता है।

गांधी जी ने यह बहुत पहले कहा था कि शिक्षा–विदेशी साहित्य माध्यम से मिलती है। जनता और भारत के बुद्धिजीवी वर्ग के बीच का संबंध कहीं टूटा हुआ है और उसका मूल कारण ही अंग्रेजी शिक्षा का अतिप्रसार है। इस संवादहीनता को तोड़कर शिक्षित वर्ग को समाज की आत्मा से जोड़ने के लिए भारतीय साहित्य को शिक्षा में उचित स्थान देना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।''2

वैश्विक हिंदी सम्मेलन 2014 मुंबई में हुआ तब इस संसीान ने ठान ली की, जनतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप भारत की जनता के सभी सूचनाएँ, सुविधाएूं और सेवाएँ, सुविधाएूं और सेवाएँ जनसाहित्य अर्थात् राज्यों की राजभाषा तथा भारत की राजभाषा हिंदी में प्राप्त हो। विश्व स्तर पर हिंदी शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। ई–गव्हर्नंस और डिजिटल इंडिया आदि में हिंदी व भारतीय भाषाओं का प्रयोग हो। 'वैश्विक हिंदी सम्मेलन का प्रयास हे कि भारत में शिक्षा व रोजगार भारतीय भाषाओं के लिए साहित्य–टेक्नोलॉजी का भी विकास एवं प्रसार हो। स्कूलों में विद्यार्थियों को

 Copyright ⓒ 2020Authors

कम्प्यूटर, मोबाईल व इस प्रकार के नवीनतम उपकरणों पर हिंदी व भारतीय भाषाओं में कार्य की शिक्षा दी जाए ताकि इंटरनेट व सोशल मीडिया पर हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को महत्वपूर्ण स्थान मिले तथा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य का विश्व स्तर पर प्रसार हो। **हिंदी एवं अन्य भारतीय साहित्य में ज्ञान–विज्ञान, व्यापार–व्यवसाय तथा जनसूचना व जनसंचार का प्रसार हो ताकि विदेशी साहित्य की बाधा से मुक्त होकर देश के लोग अपनी साहित्य के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में विकास की उँचाइयों को छू सके। वैश्विक हिंदी सम्मेलन में अनेक विद्वानों ने हिंदी के गहन विषय पर विचार–विमर्श किया है।"3**

हिंदी साहित्य का भविष्य साल 2050 तक दुनिया की सबसे शक्तिशाली भाषाओं में से एक होगी। हिंदी भाषी के 18 करोड़ लोगों की मातृभाषा है जबकि 30 करोड़ लोग ऐसे है जो हिंदी का इस्तेमाल सैकेंड लैंग्वेज के तौर पर करते हैं। यानी जो संवाद हम हिंदी में करते हैं, वो भारत के करीबी 48 करोड़ लोगों तक सीधे पहुँचता हे इतना ही नहीं दुनिया के करीब 150 देश ऐसे हैं जहाँ हिंदी भाषी लोग रहते हैं।

21वीं सदी भारत और चीन की होगी। आज भारत चीन विश्व की सबसे तीव्र गति से उभरने वाली अर्थव्यवस्थाओं में से हैं। इन देशों के पास अपार प्राकृतिक संपदा तथा युवतर मानव संसाधन है जिसके कारण ये भावी वैश्विक संरचना में उत्पादन के बड़े स्त्रोत बन सकते हैं।

वैश्विक संदर्भ में हिंदी का सामर्थ्य– जब हम उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी का परीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि वह अधिक मात्रा में प्रायः सभी निष्कर्षों पर खरी उतरती है। आज यह विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्वपूर्ण राष्ट्रों जिनकी संख्या लगीाग एक सौ चालीस है। सर्वप्रथम सन 1999 में 'मशीन ट्रांसलेशन समिट अर्थात यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोकियो विश्वविद्यालय के प्रो. हीजुमितनाका ने भाषाई

 Copyright ⓒ 2020Authors

आँकड़े पेश करके सिद्ध किया है।"4 उनके द्वारा प्रस्तुत आँकड़ों के अनुसरा विश्वभर में चीनी साहित्य बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय है।

अंग्रेजी तो तीसरे क्रमांक पर पहुँच गई है। प्रसाद नौटियाल ने साहित्य शोध अध्ययन 2005 के हवाले से लिखा है कि, **विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ पच्चीस लाख दस हजार तीनसौ बावन हे जबकि चीनी बोलनेवालों की संख्या केवल नब्बे करोड़ चार लाख छ हजार सो चौदा है। यदि हम मान भी लें कि आंकड़े झूठ बोलते हैं ओर उनपर आँख मूंदकर विश्वास नहीं किया जा सकता है तो भी इतनी सच्चाई निर्विवाद है कि हिंदी बोलनेवालों की संख्या के आधार पर विश्व की दो सबसे बड़ी भाषाओं में से है।"5** लेकिन वैज्ञानिकता का कहना हे कि हम इस बात को स्वीकार करें कि अंग्रेजी के प्रयोक्ता विश्व के सबसे ज्यादा देशों में फैले हुए हैं। वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शासकीय, व्यवसायिक, वैचारिक गतिविधियों को चलाने वाली सबसे प्रभावशाली साहित्य बनी हुई है। आने वाली पीढ़ी की साहित्य दुनिया की सबसे ज्यादा बोली व समझी जाने वाली साहित्य बन जाएगी।

आज विश्व में सबसे जयादा पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिंदी के हैं। इसका आशय यही है कि पढ़ा-लिखा वर्ग भी हिंदी के महत्व को समझ रहा है। इतना ही नहीं हिंदी के शब्दकोश तथा विश्वकोश में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं।

राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्र में हिंदी- जहाँ तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक विनिमय के क्षेत्र में हिंदी के अनुप्रयोग का सवाल है तो यह देखने में आया है कि देश के नेताओं में समय-समय पर अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में भाषण देकर उसकी उपयोगिता का उद्घोष किया है जैसे अटलबिहार वाजपेयी तथा पी.व्ही. नरसिंहराव या नरेंद्र दामोदर मोदी द्वारा शिखर सम्मेलन में अवसर पर हिंदी में दिए गए भाषण भी उल्लेखनीय हैं।

Copyright ⓒ 2020Authors

गुण और परिमाण दोनों दृष्टियों से ही हिंदी काव्य साहित्य संस्कृत काव्य से भी आगे पहुँच चुकी है। जैसे– पद्मावत, रामचरितमानस तथा कामायनी जैसे महाकाव्य विश्व की किसी भी साहित्य में नहीं हैं।

आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में पाठ सामग्री उपलब्ध कराने में तेजी लाए। इसके लिए समवेत प्रयास की जरूरत है। यह तभी संभव है जब लोग अपने दायित्वबोध को गहराइयों तक महसूस करे और सुदृढ़ इच्छाशक्ति के साथ संकल्पित हो। आज समय की माँग है कि हम सब मिलकर हिंदी के विकास की यात्रा में शामिल हो ताकि तमाम निष्कर्षों एवं प्रतिमानों पर कसे जाने के लिए हिंदी को सही मायने में विश्व साहित्य की गरिमा प्रदान कर सके।

Copyright ⓒ 2020Authors

संदर्भ सूची

1– मॉरिशस की हिंदी कविता, महात्मा गाँधी हिंदी संस्थान, 1975, पृ.32

2– विक्रम सुनील सिंह– मॉरिशस का कथा साहित्य और अभिमन्यु अनत, पृ.17

3– विक्रम सुनील सिंह– मॉरिशस का कथा साहित्य और अभिमन्यु अनत, पृ.63

4– गोयनका कमल किशोर– मॉरिशस की हिंदी कहानियाँ, पृ.11

5– प्रह्लाद रामशण– मॉरिशस : हिंद महासागर में एक नवोदित राष्ट्र, राजपाल एंड संस, दिल्ली, 1987, पृ.51

Copyright ⓒ 2020Authors